MASTER OF ARTS (HISTORY) (REVISED) (MAHI)

Term-End Examination December, 2024

MHI-106: EVOLUTION OF SOCIAL STRUCTURES IN INDIA THROUGH THE AGES

'IMPORTANT QUESTIONS' WITH 'ANSWERS'

PDF AVAILABLE

2nd PART

What were the main concerns of the socio-religious reform movements of the 19th Century ? Elaborate.

19वीं शताब्दी के सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन के क्या प्रमुख आयाम थे ? व्याख्या कीजिए।

The socio-religious reform movements of the 19th century in India were aimed at addressing various social, religious, and cultural issues that had plagued Indian society. These movements emerged as a response to the social injustices, rigid religious practices, and the need for modernization. The main concerns were:

1. **Social Reforms**: The reformers focused on eradicating social evils such as **caste discrimination**, **untouchability**, **sati** (**widow burning**), and **child marriage**. They aimed to promote **gender equality** and uplift the status of women in society.

सामाजिक सुधारः

सुधारकों का ध्यान सामाजिक बुराइयों जैसे जातिवाद, अछूतता, सित प्रथा और बाल विवाह को समाप्त करने पर था। उनका उद्देश्य लिंग समानता को बढ़ावा देना और समाज में महिलाओं की स्थिति को ऊंचा करना था।

2. Religious Reform: Reformers aimed to purify and modernize religious practices, often challenging outdated rituals and superstitions. They emphasized the need for rationalism and spirituality in religion. Prominent leaders like Raja Ram Mohan Roy and Swami Vivekananda called for the reform of Hinduism and other religions to make them more relevant to contemporary society.

धार्मिक सुधार:

सुधारकों का उद्देश्य धार्मिक प्रथाओं को **पवित्र** और आधुनिक बनाना था, जो अक्सर पुराने रीति-रिवाजों और अंधविश्वासों को चुनौती देते थे। वे धर्म में तर्कवाद और आध्यात्मिकता की आवश्यकता पर बल देते थे। प्रमुख नेता जैसे राजा राममोहन राय और स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म और अन्य धर्मों में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया, ताकि वे समकालीन समाज के लिए अधिक प्रासंगिक बन सकें।

3. **Promotion of Education**: One of the key concerns of the reformers was to spread **education**, especially among **women** and the **lower castes**. They believed that education was crucial for personal empowerment and social progress. Efforts were made to establish schools, colleges, and literacy programs.

शिक्षा का प्रचार:

सुधारकों की एक प्रमुख चिंता शिक्षा का प्रसार थी, खासकर महिलाओं और नीच जातियों के बीच। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तिगत सशक्तिकरण और सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। स्कूलों, कॉलेजों और साक्षरता कार्यक्रमों की स्थापना के लिए प्रयास किए गए थे।

4. **Modernization of Indian Society**: Reformers also sought to modernize Indian society by promoting **scientific thinking** and **Western education**. They encouraged Indians to adopt modern ideas and reject outdated customs and beliefs that hindered progress. The introduction of English education was an important part of this modernization process.

भारतीय समाज का आधुनिकीकरण:

सुधारक भारतीय समाज को **वैज्ञानिक सोच** और **पश्चिमी शिक्षा** को बढ़ावा देकर आधुनिकीकरण करना चाहते थे। वे भारतीयों को आधुनिक विचारों को अपनाने और उन पुरानी कस्टम और विश्वासों को नकारने के लिए प्रोत्साहित करते थे, जो प्रगति में बाधक थे। अंग्रेजी शिक्षा का परिचय इस आधुनिकीकरण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा था।

5. Equality and Human Rights: The reform movements also focused on promoting equality and human rights for all individuals, irrespective of their social status. Leaders like Jyotirao Phule and Dr. B.R. Ambedkar worked towards the upliftment of lower castes and fought for their rights and dignity.

समानता और मानवाधिकार:

सुधार आंदोलनों का ध्यान सभी व्यक्तियों के लिए समानता और मानवाधिकार को बढ़ावा देने पर भी था, चाहे उनका सामाजिक स्थान कुछ भी हो। नेता जैसे ज्योतिराव फुले और डॉ. बी.आर. आंबेडकर ने नीच जातियों के उत्थान के लिए काम किया और उनके अधिकारों और सम्मान के लिए संघर्ष किया।

Comment on the social structures of North-East India during the colonial rule.

औपनिवेशिक शासन के दौरान उत्तर- पूर्वी भारत में सामाजिक संरचनाओं पर टिप्पणी कीजिए।

During the colonial rule in India, the **social structures** in **North-East India** underwent significant changes, although many of the indigenous traditions and systems remained intact. The social life in the region was distinct from that of the rest of India, as it was shaped by a combination of indigenous tribal cultures, interactions with neighbouring countries, and colonial policies.

1. **Tribal Society and Social Hierarchy**: North-East India was predominantly home to various indigenous tribal communities, each with its own unique social structure. These tribes had a relatively **egalitarian** society where roles were often based on age, gender, and ability rather than a rigid caste system. In many tribes, the **chief** (often a male elder) played an important role in decision-making, but leadership could also be shared or involve councils of elders.

आदिवासी समाज और सामाजिक पदानुक्रमः

उत्तर-पूर्व भारत मुख्य रूप से विभिन्न आदिवासी समुदायों का घर था, जिनकी अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचनाएँ थीं। इन आदिवासी समाजों में आमतौर पर एक समानतावादी व्यवस्था थी, जहाँ भूमिकाएँ अक्सर आयु, लिंग और क्षमता के आधार पर निर्धारित की जाती थीं, न कि कठोर जातिवाद प्रणाली के आधार पर। कई जनजातियों में, मुखिया (अक्सर एक वृद्ध पुरुष) निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था, लेकिन नेतृत्व साझा भी हो सकता था या बुजुर्गों की परिषदों द्वारा नियंत्रित होता था।

2. **Impact of Colonial Policies**: The British colonial rule had a profound impact on the social structure of North-East India. The British introduced **land revenue systems**, which affected the tribal ways of land ownership and governance. The **settled agricultural systems** in some parts led to changes in the traditional practice of **shifting cultivation**. The British also implemented policies that promoted the growth of **tea plantations**, which led to the influx of **immigrants** and caused social tensions between indigenous communities and outsiders.

औपनिवेशिक नीतियों का प्रभावः

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का उत्तर-पूर्व भारत की सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ा। ब्रिटिशों ने भूमि राजस्व प्रणालियाँ लागू कीं, जिसने आदिवासी भूमि स्वामित्व और शासकीय प्रथाओं को प्रभावित किया। कुछ हिस्सों में स्थिर कृषि प्रणालियाँ लागू करने से पारंपरिक झूम खेती की प्रथा में बदलाव आया। ब्रिटिशों ने चाय बागान के विकास को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप प्रवासी जनसंख्या में वृद्धि हुई और इससे आदिवासी समुदायों और बाहरी लोगों के बीच सामाजिक तनाव पैदा हुआ।

3. **Role of Women**: In many tribal communities, women enjoyed a relatively **higher status** compared to other parts of India. They often had control over property, took part in decision-making, and were active in social and economic activities. For example, in the **Naga** tribes, women had an important role in family and community matters. However, colonial rule introduced new **gender norms** that began to affect the traditional status of women in the region.

महिलाओं की भूमिका:

कई आदिवासी समुदायों में महिलाओं की स्थिति अन्य भागों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च थी। वे अक्सर संपत्ति पर नियंत्रण रखती थीं, निर्णय-निर्माण में भाग लेती थीं, और सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय होती थीं। उदाहरण के लिए, नागा जनजातियों में महिलाओं का परिवार और समुदाय के मामलों में महत्वपूर्ण योगदान था। हालांकि, औपनिवेशिक शासन ने नए लिंग मानदंड पेश किए, जिनका प्रभाव क्षेत्र में महिलाओं की पारंपरिक स्थिति पर पडा।

4. **Impact of Christianity**: Missionaries played an important role in shaping the social structure of North-East India during the colonial period. Christian missionaries

introduced **education**, particularly **Western-style schools**, which significantly influenced the social status and roles of indigenous people. Conversion to Christianity altered social norms, leading to new social identities and sometimes tension between converted and non-converted communities.

ईसाई धर्म का प्रभाव:

मिशनिरयों ने औपनिवेशिक काल के दौरान उत्तर-पूर्व भारत की सामाजिक संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईसाई मिशनिरयों ने शिक्षा की शुरुआत की, विशेषकर पश्चिमी-शैली के स्कूलों के माध्यम से, जिसने आदिवासी लोगों की सामाजिक स्थिति और भूमिकाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। ईसाई धर्म में धर्मांतरित होना सामाजिक मानदंडों में बदलाव लाया, जिससे नए सामाजिक पहचान उत्पन्न हुईं और कभी-कभी धर्मांतरित और गैर-धर्मांतरित समुदायों के बीच तनाव उत्पन्न हुआ।

5. Social Tensions and Resistance: The colonial rule in North-East India also led to social tensions between the indigenous populations and the colonial authorities, as well as among different tribal groups. There were various rebel movements and resistance actions, such as the Khasi Uprising (1830s) and the Angami Naga Uprising (1879), where tribal communities resisted British control over their land, culture, and social practices.

सामाजिक तनाव और प्रतिरोध:

उत्तर-पूर्व भारत में औपनिवेशिक शासन ने आदिवासी जनसंख्याओं और उपनिवेशी अधिकारियों के बीच, साथ ही विभिन्न जनजातीय समूहों के बीच **सामाजिक तनाव** को जन्म दिया। कई **विद्रोही आंदोलन** और **प्रतिरोध कार्य** हुए, जैसे **खासी विद्रोह** (1830 के दशक) और **आंगामी नागा विद्रोह** (1879), जहाँ जनजातीय समुदायों ने अपनी भूमि, संस्कृति और सामाजिक प्रथाओं पर ब्रिटिश नियंत्रण के खिलाफ प्रतिरोध किया।

In conclusion, the social structure of North-East India during colonial rule was marked by a combination of indigenous practices and the disruptive influence of British policies. While many traditional structures persisted, colonialism brought about significant changes in land ownership, gender roles, and social identities.

निष्कर्षः औपनिवेशिक शासन के दौरान उत्तर-पूर्व भारत की सामाजिक संरचना में आदिवासी प्रथाओं और ब्रिटिश नीतियों का संयोजन था। जबिक कई पारंपरिक संरचनाएँ बनी रहीं, औपनिवेशिक शासन ने भूमि स्वामित्व, लिंग भूमिकाओं और सामाजिक पहचान में महत्वपूर्ण बदलाव किए।

For PDF visit my website hindustanknowledge.com

Join whatsapp channel for links of live classes and pdf